जय हनुमंते नमः

"सचिव बैध गुर तीनि जौ प्रिय बोलहि भय आस ।

राज धर्म तन तीनि कर होई बेगिहि नास ।।

अर्थ----

मन्त्री, बैध और गुरू-ये तीन यदि भय या लाभ की आशा से हित की बात न कहकर प्रिय बोलते है तो राज्य, धर्म, शरीर इन तीनो का नाश शीघ्रता हो जाता है ।

सुन्दर काण्ड की इस चौपाई को यदि आज के समय में देखा जाए तो सचिव,बैध और गुरू को हम सरकारी सेवक, चिकित्सक और शिक्षक के रूप में जानतें है। ये तीनों समाज के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते है , यदि इनमें से कोई भी अपने कर्तव्य का निर्वाह सही से नहीं करता और अपने निजी स्वार्थ सिद्ध करने के लिए कोई अनुचित व्यवहार करता है जिसमें देश या समाज का कल्याण न हो तो उस क्षेत्र के लोगों का सामाजिक, शारीरिक और अध्यात्मिक पतन होता है।

आज हमें ऐसे बहुत सारे चाटुकार लोग मिल जायेंगे जो अपना स्वार्थ साधने के लिए लोगों की झूठी प्रशंसा करते हैं, हमें ऐसे लोगों से बचना चाहिए ।

ये सब बातें कहने का सिर्फ यही प्रयोजन है कि हमें कभी ऐसी कोई बात नहीं कहनी चाहिए जो सामने वाले को सुनाने में तो अच्छी लगे पर उसके हित में न हो।

इसी संदर्भ में कबीर दास जी ने भी लिखा हैं------

"निदंक नियरे राखिये, आंगन कुटी छांवय"।

बिन पानी साबुन बिना, निर्मल करे सुभाय"।।

SET THY HEART UPON THY WORK, BUT NEVER ON ITS REWARD.

CS Praveen Soni
Central Council Member &
Chairman, ICSI-CCGRT